विश्व न्याय मन्दिर

2 मार्च 2013

ईरान के बहाईयों के नाम

प्रिय मित्रों,

अब साढ़े तीन दशक से, लगातार जारी उग्रता में घटते-बढ़ते उत्पीड़न के एक पर एक थपेड़ों ने, आपके अत्यंत विश्वसनीय और बहादुर समुदाय को झकझोर दिया है, अत्याचार का यह दौर एक सौ साठ वर्ष पहले शुरू हुए इस सिलसिले में सबसे नया है। फिर भी, उन लोगों की आशाओं के विपरीत, जो बहाउल्लाह के अनुयायियों के समुदाय को 'उनकी' ही जन्मभूमि में शक्तिहीन करने पर तुले थे, उनके षडयंत्रों ने ही समुदाय के आधार को फिर से बढ़ाने और सैनिकों को सुदृढ़ बनाने का काम किया। आपके अधिक से अधिक देशवासियों ने, जो स्वयं भी दमन और अन्याय का शिकार रहे, न केवल वर्षों से बहाईयों के खिलाफ होता रहा अन्याय देखा बल्कि इसके बावजूद समाज के प्रति आपकी अनवरत निःस्वार्थ सेवा में रचनात्मक बदलाव की शक्ति को भी सम्मानित किया। जैसे-जैसे आपके प्रति लोगों की सहानुभूति बढ़ती गई है, वैसे-वैसे उन अवरोधों को हटाने की आवाज़ भी उठने लगी है, जिन्होंने सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में आपकी भागीदारी रोक रखी है। ऐसे में कोई आश्चर्य नहीं कि हर जगह की राजनीतिक गतिविधि के प्रति बहाईयों के रुख से जुड़े सवाल आपके देशवासियों की दृष्टि में और अधिक महत्वपूर्ण बन गये हैं।

ऐतिहासिक रूप से, इस संदर्भ में ईरान का बहाई समुदाय स्वयं को किस स्थिति में पाता है वह निश्चित रूप से विचित्र है। एक तरफ तो उस पर राजनीति से उत्प्रेरित होने, मौजूदा शासन तंत्र के खिलाफ होने -- ऐसी किसी न किसी विदेशी शक्ति, जो भी अभियोक्ता को अपनी मंशानुसार सर्वाधिक सुविधाजनक लगे, का एजेंट होने का झूठा आरोप लगाया जाता रहा है। दूसरी तरफ पक्षपातपूर्ण राजनीति में शामिल होने से समुदाय के सदस्यों के अटल इंकार को, ईरानी लोगों की समस्याओं के प्रति उदासीनता के रूप में चित्रित किया जाता रहा है। अब जबकि आप पर अत्याचार करने वालों की सच्ची मंशाएँ उजागर हो चुकी हैं तो यह आपके लिये उचित होगा कि आप अपने नगरवासियों की राजनीति के प्रति बहाई प्रवृत्ति को समझने की बढ़ती हुई दिलचस्पी का प्रत्युत्तर दें, इस संदर्भ में इस बात का पूरा ध्यान रखा जाये कि, ऐसा न हो कि, आप जो अनेक व्यक्तियों के साथ मित्रता का बन्धन कायम कर रहे है, गलत धारणाओं

को उन्हें कमजोर करने का मौका मिल जाये। इस सम्बन्ध में, हालाँकि महत्वपूर्ण, प्रेम व एकता को अभिव्यक्त करने वाले, कुछ कथनों से अधिक की आवश्यकता होगी। इस विषय पर बहाई दृष्टिकोण की रूपरेखा से उन्हें सही ढंग से परिचित कराने में आपकी सहायता के लिए हम आपके लिये निम्नांकित टिप्पणियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

इतिहास, इसकी धारा और दिशा की विशिष्ट अवधारणा को राजनीति पर बहाई दृष्टिकोण से अलग नहीं किया जा सकता। बहाउल्लाह के प्रत्येक अनुयायी का दृढ़ विश्वास मानवता में है, और यह आज उस सदियों लम्बी प्रक्रिया में सर्वोच्च स्तर पर पहुँच रही है जिसने इसे शैशवावस्था से परिपक्वता की दहलीज पर पहुँचाया है -- उस स्तर पर जो मानवजाति के एकीकरण का साक्षी बनेगा। बिल्कुल उस व्यक्ति के समान जो अपनी किशोरावस्था की अव्यवस्थित किन्तु दृढ़ सम्भावनाओं की अवधि से गुजरता है जिस दौरान उसकी छिपी शक्तियाँ और क्षमताएँ प्रकाश में आती हैं, आज पूरी मानवता भी एक अभूतपूर्व संक्रमण-काल से गुजर रही है। मौजूदा समय में जीवन की उथलपुथल और अव्यवस्था के पीछे संघर्षरत मानवता की एक नई शुरुआत की तैयारी छिपी है। जब परिपक्वता की अनिवार्यताएँ अपना अधिकार जमाना प्रारम्भ करती हैं तो व्यापक रूप से स्वीकृत प्रथाएँ व मान्यताएँ, पोषित प्रवत्तियाँ व आदतें एक के बाद एक अप्रचलित होती गईं।

बहाईयों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हो रहे दो पारस्परिक रूप से प्रभावित करने वाले आधारभूत क्रांतिकारी परिवर्तनों को देखने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। एक अपनी प्रकृति में विध्वंसक है जबकि दूसरी सम्पूर्णतात्मक है; दोनों अपनी-अपनी तरह से अपने-अपने रास्ते से मानवता को पूर्ण परिपक्वता के लक्ष्य की ओर ले जाती हैं। पहली प्रक्रिया के परिणाम चारों ओर स्पष्ट हैं -- लम्बे समय से चली आ रही मान्यताओं और संस्थाओं को व्यथित करने वाले उलट-फेर में, सामाजिक ढाँचे में नज़र आ रही दरारों को पाटने में हर स्तर पर नेताओं की अक्षमता में, उन सामाजिक नियमों के बिखराव में जिन्होंने अशोभनीय वासनाओं को लम्बे समय तक नियंत्रित रखा; और न केवल उद्देश्यहीन हो चुके लोगों, बल्कि समाजों की उत्तरदायित्व हीनता, उदासी और तटस्थता में। अपने परिणामों में विध्वंसकारी होते हुए भी विखंडित करने वाली ये शक्तियाँ मानवता की प्रगति की राह में आने वाले अवरोधों को मिटा देती हैं, विभिन्न समूहों को निकट लाकर उन्हें एकजुट करने की प्रक्रिया की राह खोलती हैं तथा सहयोग और समन्वय के नये अवसरों को उजागर करती हैं। निश्चित रूप से, बहाईयों का भरसक प्रयास होता है व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप से एकीकरण की प्रक्रिया मे संलग्न शक्तियों से जुड़ने का, क्योंकि उन्हें पूरा विश्वास है कि ये शक्तियाँ और सुदृढ़ होंगी चाहे मौजूदा परिदृश्य कितने भी

निराशाजनक क्यों न हों। मानवता पूर्णरूप से पुनर्संगठित होगी और विश्व शांति का नया युग आरम्भ होगा।

बहाई समुदाय के प्रत्येक प्रयासों के परिप्रेक्ष्य में इतिहास का दृष्टिकोण यही है।

बहाई लेखों के अध्ययन से जैसा आप जानते हैं, इस धरती पर मनुष्य के सुखी और व्यवस्थित जीवन का एकमात्र सिद्धान्त है मानवजाति की एकता, यही मानवजाति की परिपक्वता का प्रमाण है कि मानवजाति एक कुटुम्ब है, यह एक ऐसा सत्य है, जिसे कभी संदेह से देखा जाता था, उसे आज बड़े पैमाने पर स्वीकृति मिल रही है। गहराई तक जड़ जमाये हुए पूर्वाग्रहों को अस्वीकार किया जाना और विश्वनागरिकता के विचार के प्रति बढ़ता रूझान इस बढ़ती जागरूकता के संकेत हैं। फिर भी, सामूहिक चैतन्य में वृद्धि चाहे कितनी भी उत्साहजनक क्यों न हो इसे केवल उस प्रक्रिया का पहला कदम माना जाना चाहिये, जिसे पूरी होने में दशकों नहीं वरन् सदियाँ लगेंगी। क्योंकि बहाउल्लाह द्वारा घोषित मानव जाति की एकता का सिद्धान्त, लोगों और देशों के बीच केवल सहयोग का आह्वान नहीं करता, बल्कि यह उन सम्बन्धों की भी पूरी तरह एक नई अवधारणा का आह्वान करता है, जो समाज को सुदृढ़ करते हैं। और अधिक और अधिक की कभी न बुझने वाली तृष्णा को संतुष्ट करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों के असंतुलित दोहन से पैदा हुआ गंभीर पर्यावरणीय संकट इस बात का स्पष्ट संकेत है कि प्रकृति के साथ मानवजाति के वर्तमान सम्बन्ध की अवधारणा पूरी तरह अपर्याप्त है; घर-परिवार के माहौल में आ रही गिरावट, साथ-साथ पूरे विश्व में महिलाओं और बच्चों के नियमित शोषण में वृद्धि, इस बात को बिल्कुल स्पष्ट करती है कि पारिवारिक सम्बन्धों को परिभाषित करने वाले घिनौने भाव कितने व्यापक हैं; एक ओर निरंकुशता का बना रहना और दूसरी ओर प्राधिकरण के प्रति बढ़ता अनादर यह प्रकट करते हैं कि परिपक्वता की ओर अग्रसर हो रही मानवता के लिए व्यक्ति और सामाजिक संस्थानों के बीच का वर्तमान सम्बन्ध कितना असंतोषजनक है; विश्व की जनसंख्या के एक छोटे हिस्से के हाथों में भौतिक सम्पदा का इकट्ठा होना यह संकेत देता है कि आज के उभरते वैश्विक समुदाय के विभिन्न क्षेत्रों के बीच के सम्बन्धों, मूल रूप से कितनी दोषपूर्ण कल्पना है। इस प्रकार मानवता की एकता का सिद्धान्त समाज की पूरी संरचना में एक जैविक परिवर्तन का आह्वान करता है।

यहाँ जो बात स्पष्ट की जानी है वह यह कि बहाई यह नहीं मानते कि मानवजाति के जिस रूपातंरण की कल्पना की गयी है वह केवल उनके प्रयासों से ही सम्भव होगा। न ही वे कोई ऐसा आंदोलन चलाने का विचार कर रहे हैं जो समाज पर, भविष्य के बारे में उनके

दृष्टिकोण को थोपने का प्रयास करेगा। इस विश्व सभ्यता, जिस की ओर मानवता प्रबलता से अग्रसर है, को लाने में प्रत्येक राष्ट्र, प्रत्येक समूह वस्तुतः प्रत्येक व्यक्ति को अधिक या कमतर अपना योगदान देना होगा। जैसा कि अब्दुल-बहा ने पूर्वाभास दिया है मानवजाति की एकता उत्तरोत्तर प्रत्येक क्षेत्र में स्थापित होती जायेगी, जैसे कि “राजनीतिक क्षेत्र में एकता”, “विश्व के कार्यों में विचारों की एकता”, “वर्गों के बीच एकता”, और “राष्ट्रों के बीच एकता”। जैसे ही इन क्षेत्रों में एकता अस्तित्व में आयेगी, राजनीतिक रूप से संगठित एक विश्व की रूपरेखा धीरे-धीरे आकार ग्रहण कर लेगी, जिसमें विभिन्न संस्कृतियों के लिए आदर का भाव होगा तथा जो गरिमा और सम्मान की अभिव्यक्ति के लिए माध्यम उपलब्ध करायेगा।

ऐसे में विश्वव्यापी बहाई समुदाय के सामने प्रश्न है कि जब उसके संसाधन बढ़ते हैं, वह किस तरह एक नई सभ्यता के निर्माण की प्रक्रिया में अपना योगदान दे। इस उद्देश्य के लिए दो माध्यम उसके समक्ष हैं। पहला उसकी स्वयं की विकास और प्रगति से सम्बन्धित है और दूसरा व्यापक रूप से समाज में उसके शामिल होने और भागीदारी से।

पहले माध्यम के संदर्भ में, पूरी दुनिया के बहाई, सर्वाधिक सरल परिवेशें में, मानवजाति की एकता के सिद्धान्त और इसके लिए अपेक्षित संकल्पों को साकार करने वाले प्रशासनिक ढाँचे और गतिविधि के एक प्रतिमान की स्थापना के लिये जी तोड़ प्रयासों में लगे हैं, यहाँ केवल उदाहरण के लिए उनमें से कुछ का उल्लेख किया जा रहा है: बहाई सिद्धान्त की मान्यता है कि एक सचेतन आत्मा का न तो लिंग होता है, न ही कोई नस्ल, न जाति या वर्ग, यह ऐसी वास्तविकता है जो तमाम तरह के असहनीय पूर्वाग्रहों को जन्म देती है, इनमें से एक मुख्य है जिसके द्वारा महिलाओं को अपनी सम्पूर्ण सामथ्र्य का उपयोग करने और विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने से वंचित रखा जाता है; कि पूर्वाग्रह का मूल कारण अज्ञान है, जिसे समग्र मानवजाति के लिए ज्ञान सुलभ कराने वाली शैक्षणिक प्रक्रियाओं के माध्यम से दूर किया जा सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि, ज्ञान केवल कुछ सुविधासम्पन्न लोगों का ही विशेषाधिकार न बने; कि विज्ञान और धर्म, ज्ञान और व्यवहार की दो पूरक प्रणालियाँ हैं जिनके द्वारा मनुष्य अपने आस-पास की दुनिया को जानता-समझता है और जिनके माध्यम से सभ्यता का विकास होता है, कि विज्ञान के बिना धर्म बहुत जल्दी ही अंधविश्वास और कट्टरता में बदल जाता है जबकि धर्म के बिना विज्ञान कोरे भौतिकतावाद का एक उपकरण मात्र रह जाता है, कि सच्ची समृद्धि जो जीवन की भौतिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं के बीच सक्रिय संतुलन का सुफल है, वह हमारी पहुँच से दूर से दूर होती जायेगी जब तक कि

उपभोक्तावाद व्यक्ति के लिए अफीम के नशे का काम करता रहेगा; कि मानव एकता में बाधक अंधविश्वास और जीर्ण-क्षीण परम्पराओं को यदि समाप्त किया जाना है तो आत्मा गुण रूप में न्याय अत्यंत आवश्यक है जो व्यक्ति को सत्य व असत्य में अन्तर करने योग्य बनाकर वास्तविकता की खोज में उसका मार्गदर्शन करता है; कि जब सामाजिक मुद्दों के लिये इसे व्यवहार में लाया जाता है, तो न्याय एकता की स्थापना के लिए एकमात्र महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है; कि सेवा भाव से अपने आस-पास के लोगों के लिए किया गया कोई भी कार्य प्रार्थना का ही एक रूप है, और ईश्वर की आराधना का एक माध्यम। इन आदर्शों को व्यवहार की वास्तविकता में परिवर्तित करना, व्यक्ति के पर रूपांतरण को प्रभावित करना और उपयुक्त सामाजिक ढाँचों की नींव रखना, निश्चित रूप से कोई आसान कार्य नहीं है। इसके बावजूद, बहाई समुदाय इस कार्य के लिए आवश्यक सीखने की लम्बी प्रक्रिया में निष्ठापूर्वक लगा है, यह एक ऐसा उद्यम है, जिसमें समाज के सभी वर्ग, सभी समूहों के अधिक से अधिक लोग, भागीदारी के लिए आमंत्रित हैं।

निश्चित रूप से, आज विश्व के सभी भागों में चल रही सीखने की प्रक्रिया के समक्ष अनेक ऐसे प्रश्न हैं, जिनका जवाब ढूंढना होगा: विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों को किस तरह एक साथ एक ऐसे माहौल में लाया जाये, जहाँ किसी संघर्ष की आशंका न हो और जो अपने आध्यात्मिक चरित्र से पहचाना जाये, जो माहौल उन्हें अपनी अलगाववादी मानसिकता को छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करे, विचार और कार्य की एकता को बढ़ावा दें और पूरे मन से भागीदारी सुनिश्चित करे; किस तरह एक समुदाय के कार्यों का संचालन हो जिनमें पुरोहितवाद जैसा कोई सत्ताधारी वर्ग न हो, जो विशेषाधिकार और सुविधाओं का दावा करे; किस तरह स्त्री और पुरुषों को सक्षम बनाया जाये कि वे शोषण और आधिपत्य से मुक्त हो सकें और अपने आध्यात्मिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों में संलग्न हो सकें; युवाओं को किस तरह सहयोग और मार्गदर्शन प्रदान किया जाये कि वे अपने जीवन की महत्वपूर्ण अवस्था को पार कर सकें और सभ्यता के विकास में अपनी ऊर्जाओं को लगाने में सक्षम हो सकें; किस तरह परिवार में वह गत्यात्मकता पैदा की जाए जो नई पीढ़ियों में किसी काल्पनिक “अन्य” के प्रति कोई परायापन या अजनबियत का भाव या उनका शोषण करके लाभ उठाने की प्रवृत्ति पैदा किये बिना भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धि के लक्ष्य तक ले जा सकें; निर्णय तक पहुँचने में यह किस तरह सम्भव बनाया जाये कि एक परामर्श प्रक्रिया के माध्यम से विविध दृष्टिकोणों का लाभ

लिया जा सके, जो वास्तविकता की खोज की दिशा में सामूहिक प्रयास का महत्व समझते हुए व्यक्तिगत दृष्टिकोणों के प्रति मोह त्यागने को बढ़ावा दे, प्रामाणिक जानकारी को उचित महत्व दे, वास्तविकता के बारे में केवल मशविरा सामने न रखे या विभिन्न विरोधी हित वाले गुटों के बीच सत्य को केवल एक समझौते के तौर पर पेश न करे। इन जैसे प्रश्नों के या आगे उठने वाले अनेक प्रश्नों के उत्तर ढूंढने के लिए बहाई समुदाय ने कार्य, समीक्षा, परामर्श और अध्ययन के तरीके को माध्यम अपनाया है, अध्ययन में सदा न केवल बहाई लेखों के संदर्भ शामिल होते हैं बल्कि अपनायी जाने वाली शैलियों के वैज्ञानिक विश्लेषण पर भी ध्यान दिया जाता है। वस्तुतः, इस तरह की सीख को व्यावहारिक रूप कैसे दिया जाये, सम्बद्ध जानकारी की उत्पत्ति व उसको लागू करने में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी कैसे सुनिश्चित की जाये, विस्तरित हो रहे विश्वव्यापी अनुभव को प्रणालीबद्ध करने के लिए और सीखे गये पाठों के लाभ सब तक समान रूप से पहुँचाने के ढाँचों को कैसे विकसित किया जाये -- ये सब स्वयं में परीक्षण के विषय हैं।

बहाई समुदाय द्वारा अपनायी जा रही सीखने की प्रक्रिया का समग्र मार्गदर्शन वैश्विक योजनाओं की एक श्रृंखला के माध्यम से होता है, जिनके प्रावधान विश्व न्याय मन्दिर द्वारा तैयार किये गये हैं। इन सभी योजनाओं का आधार वाक्य है -- इनका उद्देश्य, सामूहिक प्रयासों के नायकों को, गाँव और मुहल्लों की आध्यात्मिक नींव सुदृढ़ करने में सक्षम बनाना है ताकि वे अपनी कुछ सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें और विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर जारी परिसंवादों में अपना योगदान दे सकें तथा इसके साथ-साथ अपनायी जा रही विधियों और दृष्टिकोणों में सामंजस्य बनाये रखें।

सीखने की प्रक्रिया के केन्द्र में उन सम्बन्धों की प्रकृति की जाँच पड़ताल करना है, जो व्यक्ति, समुदाय व समाज की संस्थाओं को जोड़ते है -- इतिहास के मंच के ये कलाकार, पूरे समय, शक्ति प्राप्त करने के संघर्ष में उलझे रहे। इस संदर्भ में इस मान्यता को कि इनके बीच का सम्बन्ध अनिवार्य रूप से आपसी प्रतिस्पर्धा पैदा करेगा, बिल्कुल दरकिनार कर दिया गया है, क्योंकि यह मनुष्य की असाधारण क्षमताओं को नज़रअंदाज़ कर देने वाली मान्यता है, इसके बदले इस मान्यता पर बल दिया गया है कि इनके बीच का सद्भावपूर्ण आपसी सम्पर्क एक ऐसी सभ्यता विकसित कर सकता है जिसमें मानवता परिपक्वता का लक्ष्य प्राप्त कर सकेगी। इन तीन नायकों के बीच नये सम्बन्धों की प्रकृति की खोज के बहाई प्रयास को अनुप्रेरित करने वाली भविष्य के समाज की वह परिकल्पना है जो बहाउल्लाह द्वारा आज से करीब डेढ़ शताब्दी पहले लिखी गई पाती में की गयी उस तुलना से प्रेरित है जिसमें विश्व की तुलना मानव शरीर से की गयी है। आपसी सहयोग ही वह सिद्धान्त है जो उस प्रणाली के कार्य पद्धति को नियंत्रित करता

है। ठीक उसी तरह जैसे अस्तित्व के इस जगत में सचेतन आत्मा का उद्भव सम्भव हुआ, असंख्य कोशिकाओं के जटिल मेल व उतको और अंगों में जिनके संगठित होने से, वे विशेष कार्य-क्षमताओं से सम्पन्न हुए, ठीक इसी तरह घनिष्ठ रूप से एकीकृत विभिन्न अवयवों की पारस्परिक-क्रियाओं की स्थिति से ही तब वांछित सभ्यता का उदय हो सकेगा, जब ये अवयव केवल अपने विकास के संकीर्ण उद्देश्य से ऊपर उठकर काम करेंगे। और जैसे प्रत्येक कोशिका और प्रत्येक अंग की क्षमता पूरे शरीर के स्वास्थ्य पर निर्भर है, ठीक उसी तरह प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक परिवार, और प्रत्येक समुदाय की समृद्धि पूरी मानवजाति के कल्याण से ही सम्भव है। इस परिकल्पना को ध्यान में रखते हुए संस्थाओं को सार्थक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए समन्वित प्रयासों का महत्व समझते हुए, उनका उद्देश्य व्यक्ति को नियंत्रित करने का नहीं बल्कि उसे उचित मार्गदर्शन से पोषित करना होना चाहिये। ऐसा होने पर वह आँखें मूंद कर आज्ञा मानते हुए नहीं, बल्कि सचेत जानकारी के साथ मार्गदर्शन को सहर्ष ग्रहण करेगा। समुदाय भी एक ऐसा माहौल बनाये रखने का दायित्व सम्भालेंगे जिसमें संस्थान की योजनाओं के अनुरूप आम लोगों के हित के लिए काम करने के इच्छुक व्यक्तियों की शक्तियाँ संगठित प्रयासों के साथ-साथ बढ़ती जाएँगी।

यदि सम्बन्धों के ताने-बाने को उपर्युक्त आकार देना है, और मानवजाति की एकता के सिद्धान्त पर आधारित जीवन के प्रतिमान को बढ़ावा देना है तो बड़ी सावधानी से कुछ मूल अवधारणाओं का परीक्षण करना होगा। इनमें सबसे महत्वपूर्ण है शक्ति की अवधारणा। यह स्पष्ट है कि प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वंद्विता, विभाजन और श्रेष्ठता पर आधारित आधिपत्य के एक साधन के रूप में शक्ति की अवधारणा को त्यागना होगा। इसका मतलब शक्ति के प्रयोग को नकारना नहीं है; आखिरकार जहाँ समाज की संस्थाएँ जनता की सहमति के आधार पर चुनी गयी हैं, वहाँ सत्ता के संचालन में ही शक्ति का उपयोग निहित है। किन्तु राजनीतिक प्रक्रियाओं को जीवन की अन्य प्रक्रियाओं की तरह ही मनुष्य की चेतना की अपार शक्तियों से अप्रभावित नहीं रहना चाहिये जैसा कि बहाई धर्म -- इस सम्बन्ध में, समय के साथ-साथ प्रकट हुए प्रत्येक महत्वपूर्ण धार्मिक परम्परा -- की आशा-अपेक्षा रही है: एकता की शक्ति से, प्रेम की शक्ति से, निस्वार्थ सेवा और सद्कर्मों की शक्ति से। इस संदर्भ में शक्ति से सम्बन्धित शब्द हैं, “विमुक्ति”, “प्रेरणा”, “दिशा”, “माध्यम”, “मार्गदर्शन” और “सक्षमता”। ‘शक्ति’ कोई सीमित अस्तित्व नहीं है जिस पर “आधिपत्य” किया जाये और “ईर्ष्यावश रक्षित” रखा जाये; इसमें रूपान्तरण की असीमित क्षमता है जो मानवजाति के समुदाय में निहित है।

बहाई समुदाय इस बात को अच्छी तरह समझता है कि जब तक उसका बढ़ता हुआ अनुभव वांछित अन्तःक्रियाओं के वर्ग की कार्यप्रणाली में, आवश्यक अन्तर्दृष्टियाँ न प्राप्त कर ले, इससे पहले उसे काफी दूरी तय करनी है। वह परिपूर्णता हासिल करने का कोई दावा नहीं करता। ऊँचे आदर्शों को थामना और उनका प्रतिरूप बन जाना दोनों एक समान बात नहीं है। आगे अनगिनत चुनौतियाँ हैं और बहुत कुछ सीखा जाना बाकी है। कोई आम पर्यवेक्षक इन चुनौतियों पर विजय पाने के समुदाय के प्रयासों को "आदर्शवादी" प्रयासों की संज्ञा दे सकता है। इसके बावजूद निश्चित रूप से यह दर्शाना कि बहाईयों की रुचि अपने देश के मामले में नहीं है, और इस आधार पर उन्हें देशभक्त नहीं मानना उचित नहीं होगा। बहाईयों का प्रयास कुछ लोगों को भले ही कोरा आदर्शवाद लगे, लेकिन इसमें गहराई तक निहित मानवजाति के हित की चिंता को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। आज ऐसे में जब मानवजति को संघर्ष और प्रतिस्पर्धा के दौर से बचाने तथा उसकी सुख-शांति संरक्षित रखने की कोई मौजूदा सक्षम व्यवस्था नहीं है, तो उन आवश्यक सम्बन्धों की प्रकृति के विषय में, जो जनसाधारण के भविष्य में सन्निहित है, जिसकी ओर मानवजाति अनवरत रूप से खींची जा रही है, उसे समझने के लोगों के एक समूह के प्रयास पर, किसी भी सरकार को आपत्ति क्यों हो सकती है ? ऐसे किसी प्रयास में आखिर कौन सी हानि है ?

ऊपर के विचारों से स्पष्ट हुई रूपरेखा के आधार पर अब सभ्यता के विकास में योगदान के उद्देश्य से बहाई समुदाय के प्रयासों के दूसरे पहलू पर विचार करना सम्भव है: वह है समाज में व्यापक रूप से इसकी सहभागिता। स्पष्ट रूप से बहाई समुदाय के योगदान का एक पहलू, दूसरे पहलू का विरोधी नहीं हो सकता। अपने समुदाय में एकता के सिद्धान्त को साकार करने वाले विचार और प्रतिमान स्थापित करने का प्रयास करते हुए वे, सामाजिक रूप से, बिल्कुल अलग तरह की मान्यताओं और गतिविधियों में, चाहे किसी भी परिमाण में, शामिल नहीं रह सकते। इस तरह के दोहरे चरित्र से बचने के लिए बहाई समुदाय ने समय के साथ-साथ, प्रभुधर्म की शिक्षाओं के आधार पर सामाजिक जीवन में प्रतिभागिता की रूपरेखा में बदलाव किये हैं। बहाई प्रयासों की, चाहे वह व्यक्ति स्तर पर हो या सामूहिक स्तर पर, पहली प्राथमिकता है, बहाउल्लाह के आदेश को व्यवहार में उतारना: "वे, जो निष्ठा और विश्वास के गुणों से विभूषित हैं, उन्हें आनंद और उल्लास से इस धरती के समस्त लोगों के साथ जुड़ना चाहिये, क्योंकि लोगें के साथ जुड़ाव ने हमेशा एकता और भाईचारे को बढ़ावा दिया है और आगे भी देगा, यह विश्व की व्यवस्था के संरक्षण में सहायक होगा, और राष्ट्र सबल होंगे।" अब्दुल-बहा ने आगे समझाया है कि -- "आपसी मेल-मिलाप और जुड़ाव से ही, व्यक्तिगत या सामूहिक स्तर पर, हमें प्रसन्नता

और प्रगति मिलती है।" "यह मानवपुत्रों के बीच मित्रता, प्रेम ओर एकता में सहायक है।" इस संदर्भ में उन्होंने लिखा है, "यह मनुष्य जगत के जीवन का माध्यम है, और जो कुछ भी विभाजन, विलगाव और दूरी बढ़ाती है वह मानवजाति को मृत्यु की ओर ले जाती है।" धर्म के मामले में भी उन्होंने स्पष्ट किया है कि "इसे प्रेम और भाईचारे का कारण बनना चाहिये। यदि धर्म विवाद और संघर्ष का कारण बनता हो तो उसका न होना ही बेहतर है।" यही कारण है कि बहाई हमेशा बहाउल्लाह के निर्देशों का पालन करने का हर सम्भव प्रयास करते हैं, "अलगाव की तरफ से अपनी आँखें बंद कर लो, तब अपनी दृष्टि एकता पर केन्द्रित कर लो।" वे अपने अनुयायियों का आह्वान करते हैं, "निश्चित रूप से वही मनुष्य है जिसने सम्पूर्ण मानवजाति की सेवा के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया है।" "समय के जिस दौर में तुम रह रहे हो उसकी आवश्यकताओं के प्रति उत्सुकतापूर्वक सम्बद्ध रहो।" यह बहाउल्लाह का परामर्श है, "और इसकी अपेक्षाओं और आवश्यकताओं पर ध्यान केन्द्रित करो।" अब्दुल-बहा ने कहा है कि -- "मानवता की सर्वोपरि आवश्यकता है सहयोग और परस्पर सद्भाव"। "मनुष्यों के बीच भाईचारा और एकता जितनी सुदृढ़ होगी, मानवीय गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में रचनात्मकता और परिपूर्णता की शक्ति उतनी ही अधिक होगी।" बहाउल्लाह कहते हैं -- "एकता का प्रकाश इतना शक्तिशाली है कि वह सम्पूर्ण पृथ्वी को प्रकाशित कर सकता है।"

मन में ऐसे विचारों के साथ बहाई अपने संसाधनों के अनुरूप, अधिक से अधिक संख्या में ऐसे अभियानों, संगठनों, समूहों और लोगों के साथ समाज के रूपान्तरण की भागीदारी में शामिल हो रहे हैं। जो प्रयास कर रहे हैं, सम्पूर्ण मानवजाति की एकता, उसके हित को बढ़ावा देने और विश्व एकता में योगदान देने हेतु। निश्चित रूप से उपर्युक्त उल्लिखित उद्धरणों जैसे कथनों में निहित आदर्श, बहाई समुदाय का यथासम्भव समकालीन जीवन के विभिन्न पक्षों में सक्रियता से शामिल होने की प्रेरणा देते हैं। सहयोग के क्षेत्रों का चयन करने में बहाईयों को बहाई शिक्षाओं में वर्णित यह सिद्धान्त ध्यान में रखना चाहिये कि साधन लक्ष्यों के अनुरूप हों ; अनुचित साधनों से महान लक्ष्य प्राप्त नहीं किये जा सकते। विशेष रूप से, यह सम्भव नहीं है कि स्थायी एकता उन प्रयासों के माध्यम से प्राप्त की जाये जिनमें प्रतिस्पर्धा हो या जो यह मानते हों कि समस्त मानवीय अन्तःक्रियाओं में, हितों का संघर्ष, चाहे कितने भी सूक्ष्म रूप में हो, अन्तर्निहित है। यहाँ इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिये कि इस सिद्धान्त के प्रति प्रतिबद्धता की सीमाओं के बावजूद समुदाय ने सहयोग के अवसरों की कमी अनुभव नहीं है; आज अनेक लोग दुनिया में एक या अन्य उद्देश्य के लिए समर्पित होकर काम कर रहे हैं, जिनमें बहाईयों की

भागीदारी है। इस सम्बन्ध में, वे इस बात का भी ध्यान रखते हैं अपने सहकर्मियों और सहयोगियों के साथ निर्धारित सीमा का उल्लंघन न हो। उन्हें किसी भी संयुक्त उद्यम को धार्मिक मान्यताएँ थोपने के अवसर के रूप में इस्तेमाल नहीं करना है। स्वयं को ही सही मानने की प्रवृत्ति और धार्मिक अति उत्साह के दुर्भाग्यपूर्ण प्रदर्शनों से हर कीमत पर बचना है। हालाँकि, बहाईयों को अपने सहयोगियों के साथ, अपने अनुभवों से प्राप्त सीख बांटनी चाहिये, उसी प्रकार जैसे "वे इस सहयोग से प्राप्त अन्तर्दृष्टियों को अपने समुदाय-निर्माण के प्रयासों में शामिल कर प्रसन्न हैं।"

अन्त में, यह हमें राजनीतिक गतिविधि के विशिष्ट प्रश्न पर लाता हैं। बहाई समुदाय की धारणा है कि मानवता, सामाजिक विकास के आरम्भिक चरणों से गुजरने के बाद अपनी सामूहिक परिपक्वता की दहलीज़ पर खड़ी है; उसका विश्वास है कि परिपक्वता के इस दौर का परिचायक, मानवजाति की एकता का सिद्धान्त, समाज के ताने-बाने में परिवर्तन लायेगा; बहाई सिद्धान्तों के अनुरूप संचालित सीखने की प्रक्रिया के प्रति बहाई समुदाय की निष्ठा और समर्पण ने, सभ्यता के विकास के तीन नायकों, व्यक्ति, समुदाय और समाज की संस्थाओं के बीच सम्बन्धों की एक नई रूपरेखा की कार्यप्रणाली सामने रखी है; इसका विश्वास है कि प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वंदिता, विभाजन और तुलनात्मक वरिष्ठता की भावना से मुक्त, शक्ति की एक नई अवधारणा इस नये सम्बन्धों का आधार होगी; इसकी प्रतिबद्धता एक ऐसे विश्व की परिकल्पना के प्रति है जो मानवता की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता से लाभान्वित होगा, जिसमें अलगाव के लिए कोई विभाजन रेखा नहीं होगी, राजनीति के प्रति बहाई दृष्टिकोण की रूपरेखा में ये सभी आवश्यक तत्व शामिल हैं। संक्षेप में इनका उल्लेख निम्नलिखित है।

बहाईयों को राजनीतिक शक्ति की अपेक्षा नहीं है। वे अपने-अपने देश की सरकारों में कोई भी राजनीतिक पद स्वीकार नहीं करेंगे, चाहे वहाँ कोई भी राजनीतिक प्रणाली लागू हो, हालाँकि वे केवल प्रशासनिक पदों को स्वीकार करेंगे। वे किसी भी राजनीतिक समूह के साथ स्वयं को नहीं जोड़ेंगे, पक्षपाती मुद्दों में नहीं उलझेंगे, या किसी समूह या गुट के विभाजन सम्बन्धी कार्यक्रमों में भागीदारी नहीं करेंगे। किन्तु इसके साथ ही, बहाई उन लोगों के प्रति आदरभाव रखेंगे, जिन्होंने अपने-अपने देशों की सच्ची सेवा के उद्देश्य से राजनीति का क्षेत्र चुना है या राजनीतिक गतिविधियों में शामिल हैं। राजनीतिक गतिविधि में शामिल नहीं होने के बहाई समुदाय के दृष्टिकोण की मंशा, सही अर्थों में, राजनीति के प्रति मूल रूप से कोई आपत्ति व्यक्त करना नहीं है; वस्तुतः, उसका मानना है कि मानवजाति स्वयं को अपनी राजनीतिक

गतिविधियों के माध्यम से व्यवस्थित करती है। बहाई नागरिक चुनाव के लिए वोट डालते हैं, यदि ऐसा करने के लिए उन्हें स्वयं को किसी राजनीतिक समूह से जोड़ना न पड़े। इस संदर्भ में वे सरकार को किसी समाज का कल्याण और व्यवस्थित विकास सुनिश्चित करने और उसे बनाये रखने की एक प्रणाली के रूप में देखते हैं, और वे सभी वचन देते हैं कि अपनी धार्मिक आस्थाओं को विकृत किये बिना, जिस देश में वे रह रहे हैं वहाँ के हर एक नियम-कानूनों का पालन करेंगे। बहाई किसी भी सरकार को गिराने की उकसाने वाली किसी भी साजिश का हिस्सा नहीं बनेंगे। और न ही वे विभिन्न देशों की सरकारों के बीच के राजनीतिक सम्बन्धों में कोई हस्तक्षेप करेंगे। इसका यह अर्थ नहीं है कि वे विश्व की मौजूदा राजनीतिक प्रक्रियाओं के प्रति उदासीन हैं तथा न्यायपूर्ण और निरंकुश शासन में कोई भेद नहीं करते। विश्व के शासकों को अपनी जनता के प्रति कुछ पावन दायित्वों का पालन करना होता है, जिसे किसी भी देश की सबसे मूल्यवान सम्पदा माना जाना चाहिये। बहाई जहाँ कहीं भी रह रहे होते हैं, वे न्याय के स्तर को बनाये रखने का प्रयास करते हैं; वे अपने तथा अन्य लोगों के प्रति बरती जाने वाली असमानता को सम्बोधित करते हैं, किन्तु केवल उन्हें उपलब्ध कानून सम्मत तरीकों से ही, हर तरह के हिंसक विरोधों से बिल्कुल अलग रहते हुए। इससे बढ़कर, यह कि मानवता के प्रति बहाईयों के हृदय में जो प्रेम है वह किसी भी तरह उन सेवाओं के कर्तव्य के आड़े नहीं आता है, जो अपने देश की सेवा के लिए वे करना चाहते हैं।

ऊपर के पैराग्राफ में उल्लिखित कुछ सरल निर्देशों अथवा अपेक्षाओं के साथ यह दृष्टिकोण या रणनीति बहाईयों को उस दुनिया में अपनी निष्ठा बनाये रखने में सक्षम करेगी जहाँ राष्ट्र और कबीले एक दूसरे के खिलाफ खड़े हैं और सामाजिक ढाँचों के द्वारा लोग बाँटे गये हैं; तथा एक-दूसरे से अलग हो रहे हैं। एक वैश्विक अस्तित्व के रूप में एकजुटता तथा अखण्डता बनाये रखने के लिये, उन्हें यह सुनिश्चित करने में भी समर्थ बनायेगी कि एक देश में बहाईयों की गतिविधियाँ किसी अन्य देश में उनके बंधुओं के अस्तित्व को संकट में नहीं डाले। इस प्रकार विभिन्न राष्ट्रों और राजनीतिक समूहों के प्रतियोगी हितों के खिलाफ सतर्क-सजग बहाई समुदाय, शांति और एकता को बढ़ावा देने वाली प्रक्रियाओं में योगदान के लिए अपनी क्षमताएँ निर्मित करने में सक्षम है।

प्रिय मित्रों: हम इस बात से अवगत हैं कि इस पथ पर चलना, जो आप दशकों से इतनी सक्षमता से करते आये हैं, चुनौतियों के बिना नहीं है। यह ऐसी निष्ठा की मांग करता है, जो डिगायी न जा सके, आचरण की एक ऐसी पावन ईमानदारी की जिसे कम करके न आँका जाये, विचारों की स्पष्टता की जो कभी धुंधली न पड़े, अपने देश के प्रति ऐसे प्रेम की जिसे कभी तोड़ा-

मरोड़ा न जा सके। अब जब आपके देशवासी आपकी स्थिति को समझ चुके हैं और इसमें भी कोई संदेह नहीं कि सामाजिक जीवन में और अधिक भागीदारी की आपके लिये सम्भावनाएँ बढ़ेंगीं, हम प्रार्थना करते हैं कि अपने मित्रों और देशवासियों को इन पृष्ठों में प्रस्तुत रूपरेखा समझा पाने में आपको ईश्वर का सहयोग मिले, ताकि उन सबके सहयोग से, उनके साथ मिलकर आपको अपने लोगों के लिए काम करने का अधिकाधिक अवसर मिल सकें, उनके अनुयायियों के रूप में आपकी पहचान के बारे में बिना कोई समझौता किये, जिसने एक शताब्दी से भी अधिक समय पहले, एक नई विश्व व्यवस्था की ओर मानवता का आह्वान किया था।

-विश्व न्याय मन्दिर